नागार्जुन की काव्यगत विशेषताएं

प्रस्तुतकर्ता –

ओम प्रकाश रविदास

PPT for syllabus 2018 CBCS Sem:-III (G) core-course-III, Aadhunik Hindi Kavita entitled as Nagarjun ke Kavya ki visheshta
Dated:- 03/02/2021

भुमिका

- जनकवि नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा तरौनी ग्राम में 1911 ई में हुआ था ।
- इनका मूल नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र हैं ; 'नागार्जुन' नाम 1936 में बौध धर्म में दीक्षा लेने के बाद धारणा किया।
- इनकी आरम्भिक शिक्षा गांव की संस्कृत पाठशाला में हुई।
- परदादा,पिता सब खेती करते थे, अतः आरम्भिक जीवन अभावों में बीता।
- 1932 ई में इनका विवाह अपराजिता देवी के साथ हुआ, किन्तु घुमन्तू स्वभाव के होने के कारण वे अधिक दिनों तक गृहस्थ जीवन में टिक नहीं पायें।
- मैथिली में 'यात्रा' नाम से कविता लिखते थे।
- किसान आंदोलन तथा जे. पी. आन्दोलन में भाग लेने के कारण कई बार जेल की यात्रा करनी पड़ी।
- बाबा के नाम से प्रसिद्धि इस धुमक्कड़ एवं फक्कड़ व्यक्तित्व का निधन 5 नवम्बर सन् 1998 ई में हो गया।

रचनाएं -

- चित्रा ,युगधारा,प्रेत का बयान , सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आंखें, तालाब की मछलियां, हजार-हजार बांहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस , रतिनाथ की चाबी, बलचनमां,नयी पौध,जमनिया के बाबा आदि।
- आजादी के पूर्व से लेकर आज तक भारतीय जनजीवन में घेरनेवाली सैकड़ों बर्बर गोलीकांड ,शोषण , हिंसा, राजनीति भ्रष्टाचार, सामाजिक दुराचारी सब नागार्जुन की कविता में क़ैद हैं।
- इनके काव्यगत विशेषताओं के प्रमुख स्वर को हम निम्न शिर्षक के अंतर्गत देख सकते हैं।

सामंती – व्यवस्था के खिलाफ

- सामंती व्यवस्था के अंतर्गत बड़ें – बड़ें सामंती , जमींदार, किसानों, मजदूरों का निरंतर खुन चुस रहे थे।
- यद्यपि राष्ट्रीय आन्दोलन के कारण सामंती व्यवस्था चरमरा रही थी, फिर भी वे अंग्रेजों की सहायता से अपनी सता बनाएं रखने का पुर्ण प्रयास कर रहे थें।
- नागार्जुन ने सामंती व्यवस्था के उत्पीड़न,वैथव , प्रदर्शन की अभिव्यक्ति करने वाली कई कविताएं लिखी।
- इनकी ऐतिहासिक चेतना और सामाजिक यथार्थ को परखने की दृष्टि बहुत पैनी हैं।
- 'तालाब की मछलियां' नामक कविता के माध्यम से नारी दासता का मार्मिक वर्णन करते हुए सामंती व्यवस्था की सड़ाघ भरी सच्चाई का पर्दाफाश किया –

हम भी मछली,तुम भी मछली

दोनों ही उपयोगी वस्तु हैं।

राजनीतिक व्यंग्य की कविताएं

- इनकी कविताएं जनता को देश की राजनीति के प्रति जागरूक बनाती हैं।
- शोषण समर्थक जन प्रतिनिधियों का व्यंग्य चित्र थे नौटंकी की परिस्थि धुनें और शब्दावली में खींचते हैं।

स्वेत स्याम तैरनाम अंखियां निहार के

सिण्डकेटी प्रयुओं की पग घूर झार के

लौटे हैं कल दिल्ली से टिकट मार के

खिले हैं दाने ज्यू अनार के

आपे दिन बहार के।

- राजनेता जब राजनीति की आड़ में जनता से छंद करतें हैं तो बाबा इसका विरोध करते हैं।
- नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी सभी के छंद छदमो का पर्दाफाश बाबा ने किया हैं।

- आजादी के बाद 1962 में इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ के भारत दौरा का नेहरू जी जिस तरह से तैयार कर रहे थे यह देखकर जनकवि विफर पड़ता हैं-

आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी

यही हुई है राय जवाहरलाल की

सैनिक तुम्हें सलामी देंगे

लोग भाग बलि बलि जाएंगे

दृग श्रृंग मे खुशियां छलकेगी

ओसो में दुख झलकेगी

प्रगति मिलेगी नये राष्ट्र के भाल की

आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी

- *बटन बेचकर पंडित नेहरु, फूलों नहीं समाते हैं*

बेशर्मी की हद है फिर भी बातें बड़ी बनाते हैं

अंग्रेजी अमरीकी जोंकों की जमात में है शामिल

फिर भी बापू की समाधि पर झूक-झूक फूल चढ़ाते हैं।

- इंदिरा गांधी के आपातकाल की धोषणा का विरोध करते हैं :-

क्या हुआ आपको?

क्या हुआ आपको?

संता की मस्ती में

भूल गई बाप को?

इंदु जी इंदु जी क्या हुआ आपको ?

बेटे को तार दिया,बोर दिया बाप को

जन कवि

- नागार्जुन की कविताओं में सामान्य आदमी,शोषित किसान, निर्धन कामगर का दुःख दर्द मुखरित हुआ हैं।
- जब कहीं भी जनता शोषण,हिसा के खिलाफ आंदोलन करती है,वे पुरे मन से बिना किसी दुविधा के उसका समर्थन करती हैंः-

जनता मुझसे पूछा रहीं हैं

क्या बतलाऊं

जन कवि हूं साफ कहूंगा

क्यो हकलाऊं।

- आर्थिक विषमता का देश सहती हुई, अभावों की चक्की में पिसता आम जनता, किसानों, मजदूरों की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार सताधारी प्रेतों की वे खबर लेते हैं

लाख लाख श्रमिकों की गर्दन रहा है रेत

तीन चुका है कौन करोड़ों खेतिहरों की खेत

किसके बल पर कुल रहे है सत्ताधारी प्रेत।

- ‘शासन की बंदुक’ कविता में सता द्वारा किय जा रहें जनता के दमन का पूरजोर विरोध के साथ जनता के अदम्य साहस की अभिव्यक्ति भी करती हैं-

खड़ी हो गयी चाप कर कंकालों की हूक

नभ में बिपुल विराट सी शासन की बंदुक

उस हिटलरी गुमाल पर सभी रहे हैं थूक

जिसमें कानीहो गयी शासन की बंदूक

शोषित एवं सर्वहार जन के प्रति सहानुभूति

- जनता की पीड़ा को देखकर वे छटपटाते हैं।
- शोषित और सर्वहारा वर्ग के प्रति अपनी करूणा एवं संवेदना प्रकट करते हैं.

कुली मज़दूर हैं

बोझा ढोते हैं,खींचते हैं ठेला

धूल धूआं भाप से पड़ता है साबका

थके मांदे जहां तहां हो जाते हैं ढेर

सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन

विद्रोही और क्रांति का स्वर

- जहां कहीं भी जनता शोषित और हिंसा के खिलाफ संघर्ष करती हैं,वे उस संघर्ष में कुछ पड़ते हैं
- 1948 का तेलांगना विदोह हो, नक्सलवादी आंदोलन हो या एमरजेंसी से मुक्त होने के लिए जनता का संधर्ष और छटपटाहट।
- नागार्जुन जूलियन रोजनवर्ग का संधर्ष, नेपाली जनता का संधर्ष को भी अपना समर्थन देते हैं –

देश हमारा भूखा नंगा, घायल हैं बेकारी से

मिले न रोटी भटके दर–दर बने भिखारी से

स्वाभिमान सम्मान है होली है इंसान की

बदला सत्य अहिंसा बदली लाठी गोली डंडे हैं

कानूनों के सडीं लाश पर प्रजातंत्र के डंडे है।

निजी जीवन प्रसंगों पर लिखी कविताएं

- वर्षो तक पत्नी और गृहस्थी की चिंता न करने से उत्पन्न घोर ग्लानि और पश्चाताप,घर की याद और स्थिर शांत जीवन की इच्छा ने ही इन्हें सिंदूर तिलकित भार और प्रत्यावर्तन जैसे कविता लिखने को बाध्य किया।

तभी तो तुम याद आती प्राण

हो गया हूं नहीं पाषाण!

याद आते स्वजन

जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आंख

स्मृति विहंगम की कभी थकने न देगी पांख

- एक अन्य कविता हैं, 'यह दंतउरइत मुस्कान' जो पुत्र-प्रेम की कविता हैं-

यह दंतुरित मुस्कान

मृतक में भी डाल देगी जान

प्रकृति चित्रण

- नागार्जुन ने लगभग सारा देश घुमा है। इसलिये उनका प्रकृति चित्रण भी उनके अपने अनुभवों पर आधारित है जैसे “बादल को घिरते देखा है” कविता में हिमालय पर्वत पर फिरते हुए बादलों का ही चित्रण नहीं करते बल्कि हिमालय की घाटी की वनस्पति, वहां के लोगों के प्यार भी देते चलते हैं। अर्थात नागार्जुन अपने अनुभवों को भी कविता में दाल कर प्रस्तुत करते हैं।

तुंग हिमालय के कंधों पर

छोटी बड़ी कई झीलें हैं,

उनके श्यामल नील सलिल में

समतल देशों से आ-आकर

पावस की ऊमस से आकुल

तिक्त-मधुर बिषतंतु खोजते

हंसों को तिरते देखा है।

बादल को घिरते देखा है।

भाषा

- भाषा सहज , सरल , स्वाभिमान और सप्रेषणिय हैं
- मुहावरे , कहावतें एवं प्रतीकों का प्रयोग बड़े सुंदर ढंग से किया गया हैं
- काव्य भाषा में अलंकार,बिंब , प्रतीकों का प्रयोग है पर अलंकरण बनकर नहीं
- सामाजिक विषमता ओंर विडंबनाओ पर काव्य – भाषा उग्र, व्यंग्य – विदग्घ और प्रखर हो जाती हैं

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

छन्द

- नागार्जुन ने लोक छन्द ,गीत , प्रगीत ,मुक्तक , तुकान्त , अतुकांत सभी प्रकार की कविताएं लिखी हैं ।
- आवृति के नियम से लय का सुन्दर परिपाक इनकी निम्न कविता में हुई हैं –

चंदू, मैंने सपना देखा, उछल रहे तुम ज्यों हिरनौटा

चंदू, मैंने सपना देखा, अमुआ से हूँ पटना लौटा

चंदू, मैंने सपना देखा, तुम्हें खोजते बद्री बाबू

चंदू,मैंने सपना देखा, खेल-कूद में हो बेकाबू

कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अजय तिवारी:- नागार्जुन और उनकी कविता
- डा. रामविलास शर्मा:- मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य,वाणी प्रकाश,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 ।

धन्यवाद